jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:09 PM Page 24

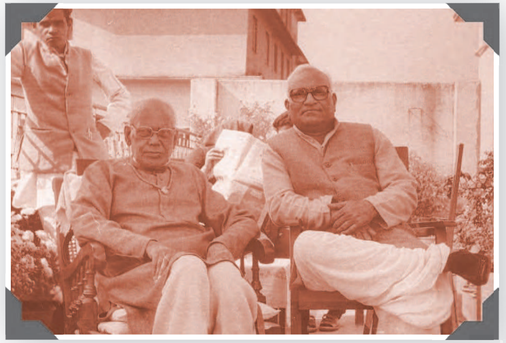

अपने गिरते स्वास्थ्य के कारण हिचकिचा रहे थे। उन्होंने कहा, "तुम आगे बढ़ो, हम तुम्हारे साथ हैं।" पर छात्र नेता जे.पी. के नेतृत्व के लिए अड़े रहे। 9 अप्रैल की जनसभा में छात्रों ने जे.पी. को 'लोकनायक' घोषित कर दिया। जे.पी. को प्रोस्टेट का रोग बहुत कष्ट दे रहा था। उसका ऑपरेशन कराने के लिए जे.पी. ने वेल्लोर जाने का निर्णय लिया। किंतु उसके पूर्व उन्होंने आंदोलन के नेतृत्व करने की सहमति दो शर्तों के साथ दे दी। पहला कि आंदोलन पूर्णतया शांतिमय रहेगा। दूसरा, आंदोलन निर्दलीय होगा। सब जे.पी. के अनुशासन से चलेंगे।

कि जो रास्ता वे खोज रहे थे, गुजरात के छात्रों ने वह दिखा दिया है। नानाजी लिखते हैं कि यहीं से जे.पी. के आंदोलन के साथ मैं जुड़ गया।

लगभग इसी समय 18 मार्च 1974 में बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति ने बिहार विधान सभा पर कूच का आयोजन किया, जिसे भंग करने लिए पुलिस ने लाठी चार्ज और गोलीवर्षा का सहारा लिया। आंदोलनकारी छात्रों में विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं की बड़ी संख्या थी। छात्रों के प्रतिनिधिमंडल ने जे.पी. से उनके आंदोलन का नेतृत्व करने का अनुरोध किया। किन्तु जे.पी.

जार्ज फर्नांडीज़ व चंद्रशेखर, नानाजी के साथ

छात्रों से वचन लेकर जे.पी. ने चार व्यक्तियों की संचालन समिति बनाई जिसमें नारायण भाई, राममूर्ति, मनमोहन चौधरी और त्रिपुरारी शरण को रखा।

साथ ही उन्होंने इस समिति को पांच सप्ताह के आंदोलन का कार्यक्रम भी बना कर दे दिया। उसके बाद वे 23 अप्रैल को पटना के अपने डाक्टर आर.वी.पी. सिंह को साथ लेकर वेल्लोर रवाना हो गए। वेल्लोर अस्पताल से भी तार और टेलीप्रिंटर द्वारा आंदोलन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश भेजते रहे।

2 जून, 1974 को वेल्लोर से लौटने के बाद जे.पी. पूरी ताकत से युवा आंदोलन में कूद पड़े। 5 जून, 1974 को गांधी मैदान में जे.पी. कह उठे, "यह क्रांति है मित्रों, और संपूर्ण क्रांति है। यह कोई विधानसभा के विघटन का ही आंदोलन नहीं है। वह तो रास्ते की मात्र एक मंजिल है। दूर जाना है, बहुत दूर जाना है।" उन्होंने 3, 4 और 5 अक्टूबर 1974 को तीन दिन के 'बिहार बंद' का आह्वान किया। इस आह्वान की सफलता के लिए नानाजी ने जीप और मोटर साईकिल से पूरे बिहार का तूफानी दौरा किया, बंद पूरी तरह सफल रहा। अब जे.पी. ने 4 नवंबर 1974 को बिहार सचिवालय के घेराव का आह्वान किया। नानाजी पुनः बिहार के दौरे पर जनजागरण के लिए निकल पड़े। 30 अक्टूबर की प्रातः सासाराम में उनकी जनसभा को पुलिस ने घेर लिया, पर सभा चलती रही। सभा के बाद नानाजी एक कार्यकर्ता के घर भोजन के लिए गए। वहां भी पुलिस पहुंच गई। एस.पी. ने नानाजी को बिहार से निष्कासन का आदेश सुनाया, कहा कि मुझे आपको बिहार की सीमा से बाहर छोड़ आने का निर्देश मिला है। परंतु घर की महिलाओं ने भोजन पूरा किए बिना नहीं जाने दिया। वहां भारी भीड़ इकट्ठा हो गई और जलूस बनकर उन्हें विदा किया। नानाजी ने कहा कि "हम 4 नवंबर को मिलेंगे" तो जिलाधीश ने कहा कि आपका फोटो प्रत्येक थाने को भेज दिया गया है। आप पटना कदापि नहीं पहुंचेंगे। पुलिस उन्हें वाराणसी में जनसंघ कार्यालय छोड़ आई। वहां से नानाजी दिल्ली चले गए और 4 नवंबर को डाकिए के भेष में आर.एम.एस. के डिब्बे में बैठकर पटना पहुंच गए। जुलूस के आरंभ होने पर उन्हें अपनी बगल में खड़े देखकर जे.पी. विस्मित रह गए। जुलूस में नानाजी जे.पी. के साथ कभी पैदल कभी जीप में छाया की तरह चले। नानाजी ने देखा कि एक सी.आर.पी.एफ. के एक जवान की लाठी जे.पी. के सिर पर पड़ने ही वाली है तो वे कूद कर जे.पी. के सामने आ गए और लाठी का वार अपनी

बायीं कलाई पर थाम लिया। उन पर कई लाठियां पड़ीं। यदि उस समय नानाजी तनिक भी चूक जाते तो पता नहीं जे.पी. का क्या होता, केवल उनका पैर ही जख्मी हुआ। मूर्च्छित जे.पी. को सड़क पर ही एक पान की दुकान के सामने खाट पर

केन्या में सफारी में खींची एक तस्वीर